Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 4, April - 2025

DOIs:10.2018/SS/202504009 --:-- Research Paper / Article / Review

भोजपुरी साहित्य में व्यक्त प्रवसन के सांस्कृतिक अध्ययन

यशवंत कुमार सिंह
शोधछात्र, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
Email- yaswantkumar62@gmail.com

शोध-सारांश: आज भोजपुरी भारत की सीमाओं में ही आबद्ध नहीं है, अपितु भारत के बाहर मॉरीशस, फ़िजी, त्रिनिडाड, सूरीनाम, गुयाना, एवं नेपाल के बहुसंख्यक लोगों की मातृभाषा बनी हुई है | भोजपुरी क्षेत्र अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण प्राचीन काल से ही विख्यात रहा है | लोक कला एवं लोक संस्कृति के दृष्टि से यह अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है | भोजपुरी संस्कृति ही अपने आप में पूर्ण, स्वस्थ व गहरी है | भोजपुरी क्षेत्र में निवास करने वाला हर व्यक्ति, हर प्राणी एक सांस्कृतिक सूत्र में बंधा विराट तत्व का ही एक रूप है | यह देश-विदेश कहीं भी जाता है, अपना सांस्कृतिक धरोहर को साथ ले जाता है | भोजपुरिया समाज अपना समरस समाज और समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण पूरे विश्व में जाना जाता है | भोजपुरिया क्षेत्र से जीतने भी मजदूर प्रवास के लिए देश या विदेश गये हैं, वे अपने सभ्यता-संस्कृति को आज भी संजोए हुए हैं |

बीज शब्द : प्रवास, मजदूर, भोजपुरी, मॉरीशस, प्रवासन, संस्कृति |

प्रवासन के साथ परहित और जनहित की भावना सामुदायिक संदर्भों से जुड़ा होता है | जिसमें मनोवैज्ञानिक रूप से अपने देश एवं अपने समाज के अपनत्व की भावना मुखर होती रहती है | जिसके चलते प्रवासी लोगों में एक विरोध का दंश हमेशा खटकता रहता है | जिस वजह से प्रवासी लोगों में एकजुटता आ सामाजिक समरस्ता का भाव प्रबल होता रहता है | प्रवासन सुख-दुख, हर्स-विसाद चाहे जिस आधार पर हो प्रवासियों में अपनत्व के भाव बहुत प्रबल होता है, जिसके चलते सामाजिक ताना-बाना में बड़ी लंबी फेर-बदल, उलट-पलट हो जाता है | सभी लोग अपनत्व के भाव से साराबोर रहते हैं | इससे असहाय के सहाय शब्द भावनात्मक ऊर्जा बन जाता है, जो उच्च-नीच, भेद-भाव, जाति-धर्म, वर्ण-वर्ग सभी दीवारों को भेद कर प्रवासन धर्म विश्वास स्थिर हो जाता है | जिसमें मानव धर्म का पाट मुखर होता है | गिरमिटिया प्रवासियों में यह तत्व मौलिक तत्व के रूप में देखा जा सकता है |

गिरमिटिया प्रवासियों में अपनी मातृभूमि, अपना मातृभाषा और अपने लोगों का यहीं भाव एकजुट करने का आधार बना | गिरमिटिया समाज में तोता राम जैसे संत अपने साथ राम चरितमानस सहित कई सारे धार्मिक किताबों को फ़िजी ले गए | वे सारे किताब धार्मिक और नैतिक ऊर्जा का आधार जरूर बना, फिर भी प्रवासन का मौलिक जरूरत सारा उच्च-नीच के भेद-भाव को खत्म कर के एक नया अलग प्रवासी संस्कृति की संरचना हुई | यही वह बिन्दु है कि उन प्रवासियों के विकास की गति बढ़ी और आज भी सामाजिक समरसता का प्रवासियों में संस्कृति पनप रही है | मूल रूप से सारे प्रवासी अपना-अपना धर्म-धारणा, सभ्यता-संस्कृति को बचाने में तत्पर रहे | सारे संघर्ष के बावजूद भी भेद-विभेद पैदा करने वाले किसी भी कड़ी को प्रवासियों ने स्वीकार नहीं किया और सभी एकजूट होकर एक-दूसरे के पर्व-त्योहार, शादी-विवाह एवं किसी भी तरह के सामाजिक कार्य में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं | एक महत्वपूर्ण बात है कि किसी प्रकार के कोई भी उच्च-नीच, भेद-भाव का रोड़ा उन लोगों के रास्ते में रुकावट बनने नहीं आता है |

आज भोजपुरी भाषा और संस्कृति भारत के साथ-साथ मॉरीशस, फ़िजी, सूरीनाम, युगांडा, त्रिनिडाड, नेपाल, साउथ अफ्रीका सहित कई देशों में अपना विस्तार कर चुका है | इन देशों के बहुसंख्यक लोगों की मातृभाषा भोजपुरी है | भोजपुरिया समाज अपना समरस समाज और समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण पूरे विश्व में जाना जाता है | भोजपुरिया क्षेत्र से जीतने भी मजदूर प्रवास के लिए देश या विदेश गये हैं, वे अपने सभ्यता-संस्कृति को आज भी संजोए हुए हैं |

दुनिया में लाखों लोग कई कारणों से हर रोज प्रवास कर रहे हैं | वह चाहे रोजगार के तलाश में या उच्च शिक्षा के लिए | एक जमाने में बिहारी मजदूर कोलकत्ता और असम छह आना पाने के लिए मजदूरी करने जाते थे | आज दिल्ली, पंजाब, गुजरात, मुंबई, केरल, बैंगलोर, हैदराबाद आदि जैसे बड़े शहरों में रोज हजार रुपये की मजदूरी के लिए जा रहे हैं | इससे बेहतर अवसर के तलाश में लोग विदेशों में जैसे- दुबई, सऊदी अरब, ईराक, ईरान, दोहा, कत्तर, रसिया, मलेशिया, अमेरिका, कनाडा, जैसे देशों में लोग उच्च शिक्षा के साथ रोजी-रोजगार के लिए भी भारी संख्या में जा रहे हैं, हालांकि बिहार और उत्तर प्रदेश से प्रवसन

अंग्रेजी शासन के समय से ही चला आ रहा है, जिसका मुख्य कारण बेरोजगारी, बहुत कम मजदूरी, मजदूरी के वेतन का भुगतान समय से नहीं करना, संपत्तिहीनता, कम-भूमि धारण, कृषि से खराब आमदनी, जाति उत्पीड़न, सामंती शोषण, शिक्षा के शुविधाओं में कमी तथा सबसे महत्वपूर्ण उद्धयोग-धंधों का नितांत कमी था |

राज्य के तीन हजार की आबादी वाली जमींदारी में बेहतर श्रमिकों को केवल दो रुपये या तीन रुपये मासिक मजदूरी मिलती थी | खाने को चावल मिलता नहीं और मोटे अनाज पर ज़िंदगी कटती है | वर्सली के अनुसार खेत मजदूरों की मजदूरी के वास्तव में 60 साल में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है जबकि अनाज की कीमतें लगातार बढ़ती गई हैं | 1842 में चावल प्रति रुपया 40 सेर मिलता था और मजदूरी थी एक आना | दस साल बाद चावल का भाव प्रति रुपया 30 सेर हो गया और मजदूरी हुई डेढ़ आना | 1862 में भाव प्रति रुपया 27 सेर का था तो मजदूरी 2 आना | 1872 मे मज़दूरी 3 आना हुई तो चावल का भाव प्रति रुपया 23 सेर था | सन 1911 में चावल प्रति रुपया 15 सेर का मिलने लगा तो मजदूरी हुई 4 आना | 1922 में चावल रुपए में पाँच सेर हो गया तो मजदूरी चार आना से छह आना रही | [1]

लगातार तेजी से बढ़ते महंगाई और मजदूरी न्यूनतम रहने से परेशान मजदूर रोजगार के खोज में गाँव से बाहर का रास्ता अपनाये | पहले लोग रोजगार के तलाश में एक जिला से दूसरे जिला में फिर जिला से दूसरे राज्य में गये | बिहार से हर साल बड़ी संख्या में मजदूर काम के तलाश में दूसरे प्रदेश निकल जाते थे | उन्हें पंजाब, कोलकत्ता, असम, गुजरात आदि शहरों में आसानी से काम मिल जाता था |

बिहार से बड़ी संख्या में श्रमिक असम के चाय बगानों में काम करने जाते थे, इसमें सभी जातियों के लोग होते थे | ग्वाला, कुर्मी, बेलदार, बढ़ई से लेकर अनुसूचित जाति व अति पिछड़ी जातियों का भी बड़ा हिस्सा होता था | असम सेंसस रिपोर्ट के अनुसार बिहार से असम जाने वालों में ग्वाला सोलह हजार थे तो दुसधों की संख्या छ: हजार थी और कुम्हार जाति की संख्या तीन हजार थी | 1901 सेंसस के अनुसार, बिहार से असम के चाय बगानों में काम करने वाले श्रमिकों की संख्या 334142 थी | [2]

बिहार के लाखों मजदूर बंगाल के कर-कारखानों में काम करते थे | बंगाल में जुट मिलों की संख्या अच्छी-ख़ासी थी | उसमें मजदूरों को काम आसानी से मिल जाता था | बंगाल के रेलवे स्टेशनों पर बिहारी मजदूर बड़ी संख्या में काम करते थे | बहुत सारे मजदूर वहाँ हाथ रिक्शा चलाते थे एवं कई मजदूर मटिया का काम भी करने लगे | बिहारी मजदूर काफी मेहनती होते थे | इसलिए उन्हें मेहनत का काम करने में कोई दिक्कत नहीं होती थी | नब्बे के दशक तक हिंदुस्तान के किसी दूसरे शहर में बिहारी मजदूरों का सबसे ज्यादा पलायन कहीं हुआ था तो वह कोलकत्ता ही था | उन दिनों कोलकत्ता बिहारी लोगों के सभ्यता-संस्कृति और जीवन का मुख्य केंद्र था | वे लोग हर रविवार या किसी प्रकार के पर्व-त्योहार के छूटी के दिनों पर धरमतल्ला मैदान या दूसरे जगह पर हजारों के संख्या में एकत्र होकर आपस में फुटबॉल, कबड्डी, कुश्ती आदि खेल खेलते | इसके अलावा वे लोग मनोरंजन के लिए गीत-गवनई भी करते | हर मौसम के अनुसार चैत महिना में चैता, तो फागुन महिना में फाग, जेष्ठ-असाढ़ महिना में कजरी, तो कभी बिरहा, कभी सोरठी गाते थे | बिहार के लोक आस्था का महापर्व छठ पूजा के समय सभी लोग एक साथ कोलकत्ता के बाबू घाट से लेकर जगन्नाथ घाट, मल्लिक घाट, दही घाट, नीमतला घाट, बाग बाजार घाट, शोभा बाजार घाट आदि घाटों पर मिल-जुल कर आपसी भाईचारा को निभाते हुए अपने सभ्यता-संस्कृति के साथ छठ पर्व करते थे |

भोजपुर एवं अवध बेल्ट में एक बहुत ही लोकप्रिय गीत रहा है- 'लागल झुलनिया का धाका, बलम कलकत्ता निकल गये' | प्रसिद्ध साहित्कार राही मासूम रजा अपने उपन्यास 'आधा गाँव' में लिखते हैं- "कलकता किसी शहर का नाम नहीं है | गाजीपुर के बेटे-बेटियों के लिए यह भी विरह का एक नाम है | यह शब्द विरह का एक पूरी कहानी है, जिसमें न मालूम कितनी आँखों का काजल बहकर सूख चूका है | हर साल हजारों-हजार परदेश जानेवाले मेघदूत द्वारा हजारों-हजार संदेश भेजते हैं | शायद इसीलिए गाजीपुर में टूटकर पानी बरसता है और बरसात में नई पुरानी दीवारों, मस्जिदों और मंदिरों की छतों और स्कूलों की खिड़कियों की दरवाजों की दीवार में विरह के अंखुए फूट आते हैं:

बरसत में कोऊ घर से ना निकसे
तुमहिं अनूक बिदेस जवैया [3].....

बंगाल के अलावा गुजरात में बड़ी संख्या में बिहारी मजदूर प्रवास किये | गुजरात में कपड़ा के मिलों में बिहारी मजदूरों को काम मिल जाता था | बिहार के मजदूरों का पंजाब से बहुत ही गहरा संबंध रहा है | सर्व-प्रथम बिहारी मजदूर पंजाब में धान के खेती के लिए गए | हालांकि आज एह संख्या काफी बढ़ गई है | खेती के अलावा पंजाब में बिहारी मजदूर भवन निर्माण, सड़क निर्माण तथा लुधियाना के कारखानों में विभिन्न तरह के कार्य कर रहे हैं | बिहार के बाहर कई प्रदेशों में प्रवास करने के वावजूद आज भी वे लोग अपने सभ्यता-संस्कृति को अपना धरोहर के रूप में सँजोये हुए हैं |

बिहार से बाहर दूसरे देश में बिहारी मजदूरों को सर्व-प्रथम मॉरीशस ले जाया गया था | मॉरीशस की एक हंटर अर्बोनेट एंड कंपनी के लिए बंगाल प्रेसीडेंसी में नील उत्पादन से जुड़े अंग्रेजों के एक रिश्तेदार जी. अर्बोनेट ने सबसे पहले बिहार से धांगड़ कुलियों को परदेश ले जाने के लिए बंगाल सरकार से अनुमति ली | कलकत्ता के मुख्य न्यायधीश मैक फरलान ने समझौते पर दस्तखत किए | यह समझौता पत्र पर कुलियों के नाम के साथ बंग्ला में लिखा गया | 15 सितम्बर, 1834 को सभी कुली जहाज एटलस पर सवार हुए | लगभग 47 दिनों के सफर के बाद जहाज पर सवार कुली 2 नवम्बर, 1834 को मॉरीशस पहुंचे | उन्हें एक

दिन जहाज पर ही रुकना पड़ा | अनुमति मिलने के बाद अगले दिन 3 नवम्बर, को उनके पाँव मॉरीशस की धरती पर पड़े | उन्हें एंटोनिएट सुगर ईस्टेट भेजा गया | [4]

1834-39 के बीच कुल 23,281 कुली और 1,285 नौकर कलकत्ता से मॉरीशस गए | 1843-44 में उनकी संख्या बढ़ कर 39,224 हो गई | कुल मिला कर दस वर्षों 1834-44 के बीच कुलियों की संख्या बढ़कर 63,790 पहुँच गई | इसमें परदेस से अपने देस लौटने वाले कुलियों की संख्या 9,446 थी | [5] इस तरह लगातार बिहारी मजदूरों को भारतीय शर्तबंदी बंधुआ-मजदूर अथवा कुली प्रथा के तहत 1834 से लेकर 1920 तक मॉरीशस ले जाया गया | चूकि बिहारी मजदूर काफी मेहनती और ईमानदार होते थे | वे बिहार में गन्ना और नील के खेती करने में कुशल थे | इसलिए उन्हें मॉरीशस ले जाया गया | वहाँ के बंजर और पथरीले जमीन को अपने खून से सिच कर आबाद कर दिये | मॉरीशस में भी नील और गन्नें की खेती होने लगी | मॉरीशस जाने और वहाँ काम करने तथा जीवन-यापन करने की कहानी काफी दुख भरी है | जिस एग्रीमेंट के तहत मजदूरों को मॉरीशस ले जाया गया था | ठीक उसके विपरीत उनके साथ होने लगा | बिहारी मजदूरों को मॉरीशस प्रवास करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा | सारे दुख-दर्द को सहते हुए बिहारी मजदूरों ने अपना संस्कृति को कभी नहीं छोड़ा | क्योंकि भोजपुरिया संस्कृति की आत्मा लोक संस्कृति में बसती हैं | किसी भी समाज की संस्कृति का उत्स वहाँ के लोक जीवन की परिव्याप्ति है | भोजपुरिया संस्कृति में भी लोक जीवन की व्याप्ति है | लोक जीवन समाविष्ट सम्पूर्ण विश्वास, मान्यताएँ, परम्पराएँ, प्रथाएँ और रीतियाँ लोकवार्ता हैं |

आज भोजपुरी भारत की सीमाओं में ही आबद्ध नहीं है, अपितु भारत के बाहर मॉरीशस, फ़िजी, त्रिनिडाड, सूरीनाम, गुयाना, एवं नेपाल के बहुसंख्यक लोगों की मातृभाषा बनी हुई है | भोजपुरी क्षेत्र अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण प्राचीन काल से ही विख्यात रहा है | लोक कला, लोक संस्कृति के दृष्टि से यह अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है | भोजपुरी संस्कृति ही अपने आप में पूर्ण, स्वस्थ व गहरी है | भोजपुरी क्षेत्र में निवास करने वाला हर व्यक्ति, हर प्राणी एक सांस्कृतिक सूत्र में बंधा विराट तत्व का ही एक रूप है | यह देश विदेश कहीं भी जाता है, अपना सांस्कृतिक धरोहर को साथ ले जाता है |

बिहार से बाहर किसी भी देश में प्रवास कर रहे भोजपुरिया समाज के मजदूर अपने सभी संस्कार व पर्व-त्योहार आपस मे मिलकर मनाते हैं | दूसरे देश में रहने वाले प्रवासी भारतीय जब भारत आते हैं तो वे लोग यहाँ से पूजा-पाठ करने के लिए गंगा जल, रामचरितमानस, पंचांग, पतरा आदि लेकर जाते हैं | प्रवासी मजदूरों अपना वार्षिक त्योहार भोजपुरिया सभ्यता-संस्कृति के अनुरूप ही मनाते हैं | वे लोग अपने प्रमुख त्योहार छठ-पूजा, होली, दीपावली, दशहरा, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, गणेश पूजा, ईद, बकरीद, मोहर्रम आदि बहुत ही उत्साह पूर्वक मनाते हैं |

मॉरीशस में प्रतिवर्ष शिवरात्रि के अवसर पर 'गंगा तालाब' पर तीन दिन तक मेला लगता है | पूरे मॉरीशस से लोग गंगा तालाब पर जाते हैं और वहाँ से जल लेकर शिव मंदिरों पर चढ़ाते हैं | गंगा तालाब पहाड़ियों के मध्य एक पवित्र झील है | कहा जाता है कि इस झील में भारतीय मजदूर अपने देश भारत से गंगा जल लाकर छिपाये थे | कालांतर में इंदिरा गांधी ने इस तालाब में भारत से लाकर गंगा जल डलवाया | गंगा तालाब के किनारे बहुत सारे मन्दिर हैं | यह मॉरीशस के हिन्दुओं का सबसे पवित्र तीर्थ स्थल है | यहाँ पर धार्मिक ग्रंथ सभागार, पुस्तकालय इत्यादि है | [6]

फ़िजी में रह रहे प्रवासी मजदूरों के संबंध में प्रवासी साहित्यकार ब्रिज वी. लाल ने अपनी पुस्तक 'चलो जहाज़ी' में जातिगत उथल-पुथल को कई नजरियों से उकेरा है | उन्होंने दर्शाया है कि किस तरह फ़िजी में बंधुआ मजदूर चाहे नीची जाति के हों या ऊंची जाति के अपनी संस्कृति के टूटे-बिखरे रूप को विदेशी धरती पर एकजुट करने के लिए प्रयासरत थे | सांस्कृतिक गतिविधियां प्रवासियों के लिए न केवल मनोरंजन का साधन बनती हैं बल्कि समुदाय कि एकजुटता और सुरक्षा कि भावना के प्रति भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं | भोजपुरिया प्रवासी मजदूर देश या विदेश जहां प्रवास कर रहे हैं, आज भी वहाँ भोजपुरी लोक-संस्कृति के चिह्न जीवंत हैं |

निष्कर्ष :

जब कोई भी प्रवासी नागरिक किसी दूसरे प्रदेश या देश में जाकर निवास करते है, तो वह उस देश या प्रदेश की संस्कृति से प्रभावित होकर वहाँ के संस्कृति के कुछ तत्व को अपनाता है या वहाँ के समाज एवं संस्कृति में पूर्ण रूप से घुल-मिल जाता है | कुछ प्रवासी मजदूर अपने मालिकों के साथ उनके साथ सभ्यता-संस्कृति को अपनाकर अच्छी सुविधाएँ लिए | बहुत सारे लोग अपने सभ्यता- संस्कृति, रीति-रिवाज, सामाजिक संबन्धों को आगे बढ़ाये |

संदर्भ :

1 श्रीकांत, (2021), बिहार : पलायन की पृष्ठभूमि, ज़ेवियर इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल रिसर्च, पटना, पृष्ट सं.- 8
2 श्रीकांत, (2021), बिहार : पलायन की पृष्ठभूमि, ज़ेवियर इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल रिसर्च, पटना, पृष्ट सं.- 20
3 सिंह, धनंजय (2016), प्रवासी श्रम इतिहास, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास, शिमला, पृ. सं.- 197

4 लेबर इमिग्रेशन इन मॉरीशस, ए पिक्टोरियल रिकलेक्शन, पृष्ट सं.- 24
5 जी, एपेंडिक्स, (4 अगस्त), इंडियन लेबर इन द मॉरीशस, रिटर्न टू एन एड्रेस ऑफ द ओनेरबुल द हाउस ऑफ कामन्स, पृष्ट सं.- 17
6 राय, डॉ. अजीत कुमार, (2022),भोजपुरी लोक संस्कृति का वैश्विक स्वरूप, रश्मि प्रकाशन, कृष्णा नगर, लखनऊ, पृ. सं.- 53
7 लाल, ब्रिज वी., (2005), फ़िजी यात्रा: आधी रात से आगे, नेशनल बुक ट्रस्ट,
8 रामशरण, प्रह्लाद, (2004), मॉरीशस का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,
9 बुद्धू, डॉ. सरिता , (2003), मॉरीशस की भोजपुरी परम्पराएँ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली,
10 उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव, (2009), लोक संस्कृति की रूप रेखा, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद,